

Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 1, Petersburg 1855.
 2,32,76.87. समनुप्राप्त mit act. Bed. 3,30,1. 73,10. — 2) *erlangen*: सा-
 धास्यं समनुप्राप्ताः पुत्रास्ते MBh. 2,1616. मानुष्यं समनुप्राप्ते वपुः N. (Bopp)
 19,28. — 3) समनुप्राप्त *angekommen, angelangt* R. 1,18,6. 4,2,16. 39,34.
 — अभिप्रेत *reichen bis zu, erreichen*: न क्लृप्तं स्वर्गलोकमभिप्राप्नुयात् ङाट.
 Br. 6,7,4,11. यद्वास्वैता ऋद्धं नामिप्राप्नुयुः 8,1,4,1. 7,3,14. 3,6. नैते संव-
 त्सरमभिप्राप्नुवन्ति Kāṇḍ. Up. 5,10,3. — desid. s. अभिप्रेत्य.

— उपपत्र *hinzukommen, nahen*: मूर्तं महिषं वापि — नावर्तयन्मुपप्राप्तं
 तीष्णपुण्यः क्षुधान्वितः R. 3,73,17.

— संप्र 1) *erreichen, gelangen zu, antreffen*: एतद्वा एताभिर्देवा आतः
 संप्राप्नुवन् ङाट. Br. 9,2,3,13.23.29. संप्राप्यैनम् (आत्मानम्) Muṇḍ. Up. 3,
 2,5. पृथक्ताः संप्रापुः — शरव्यम् Ragh. 7,42. भरद्वाजस्य संप्रापदाश्रमम् R.
 6,109,1. पारं संप्राप विद्यानाम् Kathās. 2,2,20,39. जीवन्संप्राप्त्यसि द्वा-
 त्तम् Pañkā. III,49. Vid. 23. संप्राप्या चिनयेन Bhaṭṭ. 6,68. संप्राप्त mit
 pass. Bed.: बृहद्व्याघ्रेण संप्राप्तः पथिका स मृता यथा Hit. I,4. यो ऽपि मे
 (von mir) निर्जने ऽरण्ये संप्राप्ते ऽयं जनार्णवः N. 13,16. असंप्राप्ते कर्मणि
wenn das Object nicht erreicht ist P. 2,3,12, Vārt. 3. mit act. Bed.:
 संप्राप्ते ऽहं तमाश्रमम् R. 3,42,6. 18,2. MBh. 3,2852. त्वक्संप्राप्त *sich*
auf die Haut erstreckend Suṅ. 2,64,8. — 2) *erlangen, sich zuziehen*:
 संप्राप्नुवन्तु इः खानि तासु तास्विकृ योनिषु M. 12,74. श्रापद्म् Pañkā. II,
 21. पराभूतिम् 201. परा मुद्म् Kathās. 23,15. महाक्रते संप्राप्नुहि (als Ge-
 winn aufgefasst; vgl. शते क्रतूनामपविश्रमाप सः Ragh. 3,38) MBh. 2,
 1227. संप्राप्त्यते — विनादम् ङाṅtig. 4,17. मृतेः संप्राप्यते श्रेयः Pañkā.
 I,344.347. संप्राप्त mit pass. Bed.: पूर्वेण मम मोधात्रा संप्राप्तं व्यसनं म-
 हत् R. 4,17,20. सो ऽयं ते — बन्धुप्रणाशः संप्राप्तः Brāhmaṇ. 1,23. mit
 act. Bed.: वैषम्यमपि संप्राप्ताः N. 18,8. — 3) संप्राप्त *angelangt, gekom-
 men*: संप्राप्ताय त्वतिथये प्रद्यादासनेदके M. 3,99. 9,141. Indr. 3,4. Hip.
 2,24. 4,27. R. 1,20,5. 41,28. 4,2,20. ङा. 61,7. Bhaṭṭ. 6,100. श्रेयं स
 कालः संप्राप्तः R. 3,22,4. 42,6. 2,77,1. 4,27,2. Arg. 3,18. श्रेयैर्युः संप्राप्ते
 MBh. 3,2566. तस्य वारो ऽयं संप्राप्तस्तत्र गत्तुम् Vid. 202. तदिदं संप्राप्तं
 यन्मया पूर्वमीक्षितम् R. 6,93,13. — caus. *erreichen machen*: संप्रापिपन्
 ङाट. Br. 2,2,2,7.

— अनुसंप्र 1) *erreichen, anlangen bei*: श्रेयमनुसंप्राप्य MBh. 1,5243.
 विराटमनुसंप्राप्य राजानम् 4,22. इः खं मामनुसंप्राप्तम् 1,4708. अनुसंप्राप्तः
 स्थानम् 3,1883. R. 3,68,7. — 2) अनुसंप्राप्त *angelangt, gekommen* R. 2,
 63,11. तदिदं मे ऽनुसंप्राप्तं देवि इः खं स्वयंकृतम् Daṅ. 1,11.

— अभिसंप्र 1) *erreichen, gelangen zu*: नकुलं त्वभिसंप्राप्य Draup. 8,
 16. तीरमेवाभिसंप्राप्ता दक्षिणाम् R. 2,33,21. के यूयमभिसंप्राप्ताः — मर्मात्त-
 कम् MBh. 3,408. — 2) *erlangen*: स्वं रूपमभिसंप्राप्य R. 4,3,27. — 3)
anlangen, kommen: यदर्थमभिसंप्राप्तः MBh. 3,11366.

— उपसंप्र 1) *erreichen*: तां सभामुपसंप्राप्य MBh. 3,2337. — 2) *erlan-
 gen*: ह्यास्यतामुपसंप्राप्तम् MBh. 1,5188. — 3) *hinzukommen*: जिघांसूनुप-
 संप्राप्तान्देवान्दृष्ट्वा MBh. 3,14378.

— वि 1) *hindurchreichen, durchdringen, erfüllen, ausfüllen*: कथं
 गोपत्री त्रिवृतं व्याप AV. 8,9,20. उभे व्याप नभसी महित्वा 12,3,5.28.
 उभा समुद्रौ रुच्या व्यापिथ 13,2,30. 17,1,13. ङाट. Br. 3,8,3,33. 10,4,2,
 4. जलधराः सर्वं व्याप्नुवन्ति नभस्तलम् MBh. 3,12883. सर्वयथान्याप्रिति
 रथः P. 5,2,7. तेजोमहिषा पुनरावृतात्मा तद् (सिंहासनं) व्याप Ragh. 18,
 39. Bhaṭṭ. 7,56. 13,22. Vor. 23,31. सर्वाणि भूतानि पञ्चभिर्द्याप्य मूर्ति-

भिः M. 12,124. यामिन्भूतिभिलाकानिमास्वं व्याप्य तिष्ठसि Bhag. 10,
 16. M. 12,44.24. ङा. 1. व्याप्यमान P. 3,4,56. — 2) *reichen bis* (आ):
 तत्तु स्यादाप्रपदीनं व्याप्नोत्याप्रपदं हि यत् (प्राप्नोति P. 5,2,8. AK. 2,6,3,
 21) H. 678. — partic. व्याप्त 1) *durchdrungen, erfüllt, angefüllt* H. 1473.
 तस्यावयवभूतेस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत् ङवेटांय. Up. 4,10. आवापथिव्यो-
 रिदमतरं हि व्याप्तं त्वैकेन दिशश्च सर्वाः Bhag. 11,20. R. 1,33,15. 37,17.
 3,39,12. 4,31,25. Suṅ. 2,173,18. परदेशं ततो गच्छेत्प्रणिधिध्यात्म-
 यतः Pañkā. III,38. पिपीलिकाभिः सर्वतो व्याप्ते व्याकुलीकृतश्च 171,1.
 समिच्चपालचमसध्याता गृहा यवनान् Prab. 44,8. (श्रापः) अद्यात्ताश्चेदमे-
 ध्येन M. 3,128. — 2) *eingonnen, in Besitz genommen*: वृत्रेण पृथिवी
 व्याप्ता पुरा किल MBh. 14,299. व्याप्ते ज्योतिषि वृत्रेण रूपे ऽथ विषये
 कृते 304. व्याप्ते वायौ तु वृत्रेण स्पर्शं ऽथ विषये कृते 306. Vgl. आकाशे
 वृत्रभूते 308. श्रपरं मे प्रिया मृता । गृह्मन्धेन च व्याप्तम् Pañkā. 227,11.
 किं व्याप्तं किमपोहितम् Prab. 116,7. Sch.: किं व्याप्तं किमाक्रातम् कि-
 मपोहितं हरीकृतम्. — 3) *in Besitz gelangt, befriedigt*: स यो व्याप्ते
 गतश्रीरिव मन्येत At. Br. 4,4.

— अभिवि *sich bis wohin erstrecken*: अभिव्याप्य *bis inclusive*: धान-
 भास्तेति द्वियमभिव्याप्य P. 2,1,134, Sch. अधिकारो ऽयं यूनास्तिरित्यभि-
 व्याप्य Siddh. K. zu 4,1,14. — Vgl. अभिव्यापक fgg.

— सम् 1) *erlangen*: तयो लोकात्समाप्नोति ये दिव्या ये च पार्थिवाः AV.
 9,5,15. 10,9,6. 13,2,15. पालम् MBh. 3,7068. सिद्धिम् 13940. तेजः 8,
 445. यशश्च धर्मं च R. 3,2,28. सर्वं समाप्नोषि (Schlegel: *tu universum per-
 fecis, West: permeare, complecti*) ततो ऽसि सर्वः Bhag. 11,10. यावतेषां
 समाप्येरन् यज्ञाः पर्याप्तदक्षिणाः Ragh. 17,17. — 2) *vollenden, erfüllen*: भू-
 तयज्ञं समाप्नोति ङाट. Br. 11,3,6,2. 8,4,2.4. 12,3,3,5. Kāṭj. Ćr. 22,2,
 17. 25,8,18. 12,20. वैदं म इदं कर्म समाप्यते ङाट. Br. 10,4,4,10. — 3)
heranreichen: यस्मात्लोकात्परमेष्ठे समाप्य AV. 12,3,45. — समाप्त 1)
vollendet, beendet, zu Ende gegangen M. 3,88. 11,81 (समाप्ते द्वादशे वर्षे).
 R. 3,49,27. Ragh. 3,65. Vid. 270. अतिशयिनि समाप्ता (erschöpft) वंश ए-
 वाशिषस्ते Vikr. 159. समाप्तमायुरस्याद्य यशश्चैव MBh. 16,83. असमाप्त
 Kāṭj. Ćr. 24,6,26. Kathās. 22,234. — 2) *vollendet, geschickt*: पूरुषः MBh.
 14,2561. — caus. 1) *erreichen oder erlangen lassen*: सैनं स्वर्गं लोकं समा-
 पयति ङाट. Br. 2,3,3,16. — 2) *zu Ende führen, vollbringen, vollführen*:
 व्यवहारान्समापयन् M. 8,420. व्रतशेषं समापयेत् 11,158. समापयामास
 MBh. 1,6885.8103. यज्ञं समापयितुम् R. 1,61,22. यद्यारब्धं समापय Ka-
 thās. 22,234. चन्दनेनाङ्गरागम् — समाप्य Ragh. 17,24. समाप्य (s. P.
 6,4,57) सा स्वस्त्ययनम् R. 2,25,44. समाप्य संध्यं च विधिम् Ragh. 2,23.
 रात्रा — समापयत तं क्रतुम् MBh. 3,9911. नयाभियोगं मनसः प्रसादं समा-
 पयस्वात्मगुणेन कामम् R. 4,29,25. तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु तपः सर्वं समाप्यते
 M. 2,228. त्रिष्वेतेष्विति कृत्यं हि पूरुषस्य समाप्यते 237. यज्ञः समाप्यताम्
 MBh. 3,9907. R. 1,11,17. कालो सागरकोटिकोटीनां विंशत्या समाप्यते
 H. 127. विडुषा विधयो महर्षयः — समापिताः Ragh. 8,72. समापिते ऽर्चने
 Kathās. 20,196. एवं पादत्रयेण वाक्यविचारः समापितः Madhus. in Ind.
 St. 1,19. — desid. 1) *zu erreichen oder zu erlangen wünschen, begehren*:
 समीप्सित begehrt, erwünscht: शिवेन वै याह् स समीप्सितं वनम् R. 3,3,22.
 — 2) *zu vollenden streben*: यमधानं समीप्सति तं समश्नुते ङाट. Br. 12,
 4,1,10. — desid. vom caus. *zu vollbringen suchen*: समापिपयिषेत् ङाट.
 Br. 14,4,3,34 = Bṛh. Ār. Up. 1,3,23. Vgl. समापिपयिषु MBh. 1,6872.